

॥ वट सावित्री पूजा विधि ॥

॥ देवी सावित्री को प्रणाम ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ पूजा की तैयारी और सामग्री ॥

वट सावित्री व्रत में देवी सावित्री, सत्यवान और वट वृक्ष का पूजन किया जाता है। ज्येष्ठ अमावस्या तथा ज्येष्ठ पूर्णिमा की क्षेत्रीय परंपराएँ अलग हैं। किस तिथि को पूजा करनी है, अपने घर की रीति और स्थानीय पंचांग से तय करें।

सामान्य पूजन सामग्री

साफ जल का लोटा, रोली या कुमकुम, अक्षत, फूल, मौली या कच्चा सूत, धूप, दीपक, फल, मिठाई और प्रसाद रखें। चौकी, साफ वस्त्र तथा सावित्री-सत्यवान का चित्र या प्रतीक घर की परंपरा में हो तो तैयार करें। सिंदूर और श्रृंगार-सामग्री अपनी रीति के अनुसार रखें।

वट वृक्ष के पास व्यवस्था

स्वच्छ और सुरक्षित स्थान वाला जीवित बरगद चुनें। तने के चारों ओर चलने की जगह देखें। पेड़ को चोट पहुँचाने वाली कील, प्लास्टिक की रस्सी या बहुत कसकर बाँधा गया धागा न लगाएँ। सार्वजनिक स्थान पर पूजा करते समय रास्ता खुला रखें।

बरगद के पास जाना संभव न हो तो घर पर उसके चित्र या प्रतीक के सामने पूजा और कथा की जा सकती है। यह विकल्प परिवार की परंपरा के अनुसार अपनाएँ।

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वट वृक्ष का पूजन क्रम ॥

१. स्नान और संकल्प

प्रातः स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें। देवी सावित्री का स्मरण करें और परिवार के मंगल की कामना से अपनी क्षमता के अनुसार व्रत का संकल्प लें। उपवास का रूप स्वास्थ्य और घर की रीति के अनुसार तय करें।

२. वृक्ष को जल और पुष्प

वट वृक्ष के पास भूमि साफ रखें। उसकी जड़ों के निकट थोड़ा स्वच्छ जल अर्पित करें। रोली, अक्षत और फूल अपनी परंपरा के अनुसार चढ़ाएँ। धूप-दीप को वृक्ष की जड़ों और सूखी पत्तियों से सुरक्षित दूरी पर रखें।

३. कच्चा सूत और परिक्रमा

कच्चा सूत या मौली हाथ में लेकर वृक्ष की परिक्रमा करें और धागा ढीले ढंग से रखें। परिक्रमा की संख्या क्षेत्र और परिवार के अनुसार बदलती है; सात या अन्य संख्या को सबके लिए अनिवार्य न मानें। वृक्ष पर धागे का बोझ न बढ़ाएँ।

४. कथा और प्रार्थना

सावित्री-सत्यवान की कथा पढ़ें या सुनें। परिवार के स्वास्थ्य, समझ और प्रेम के लिए प्रार्थना करें। आरती या दीप दिखाने की रीति हो तो सावधानी से करें। फिर प्रसाद बाँटें और पूजा-स्थल साफ रखें।

॥ देवी सावित्री को प्रणाम ॥

॥ पारण और पूजा के बाद ॥

व्रत खोलने की रीति

पूजन और कथा के बाद पारण कब और कैसे करना है, यह परिवार में प्रचलित व्रत-विधान से जानें। कुछ घरों में उसी दिन पूजा के बाद जल और प्रसाद लिया जाता है; कुछ में अलग नियम होते हैं। स्थानीय तिथि और उपवास के प्रकार के बिना एक निश्चित घड़ी का समय लागू न करें।

दान और प्रसाद

सामर्थ्य हो तो फल, भोजन या आवश्यक वस्तुएँ आदरपूर्वक बाँटें। प्रसाद घर के लोगों को दें। पूजा के बाद प्लास्टिक, कपड़े और अन्य सामग्री पेड़ की जड़ों के पास छोड़कर न जाएँ। बरगद की देखभाल इस पूजा के भाव के अनुरूप है।

स्वास्थ्य और सुरक्षा

गर्भावस्था, मधुमेह, बीमारी या दवाओं के साथ लंबा उपवास कठिन हो सकता है। अपनी चिकित्सकीय आवश्यकता के अनुसार जल और भोजन लें; दवा बंद न करें। चक्कर या कमजोरी होने पर आराम करें और जरूरत पड़ने पर चिकित्सकीय सहायता लें।

पूजा का यह सामान्य घरेलू क्रम है। स्थानीय विशेष विधि, मंत्र और पारण की रीति के लिए परिवार के बड़े या जानकार पुरोहित से मार्गदर्शन लें।

॥ वट सावित्री व्रत शुभ हो ॥